शोध मंथन Vol. XII No.IV Oct.-Dec. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

भारतीय महिलाओं के परिप्रेक्ष्य में ज्योतिबा फूले का योगदान

प्राप्तिः 27.08.2021
स्वीकृतः 31.08.2021

निर्मला
शोधार्थिनी, राजनीति विज्ञान विभाग
एस०डी० कॉलेज, मुजफ्फरनगर
ईमेलः *nirmalagautam804@gmail.com*

सारांश

सभी प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ है। वह स्वतन्त्र उत्पन्न हुआ है। उसे समानता व स्वतन्त्रता का अधिकार मिलना चाहिए, चाहे वह किसी भी जाति या वर्ण का हो। स्त्रियां जो समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, उनकी स्थिति में सुधार अति आवश्यक है। ज्योतिबा फूले ने सम्पूर्ण समाज में जागरुकता के लिए सुझाव दिया। उन्होंने समाज द्वारा शोषित महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए समुचित व्यवस्था कराने का प्रयत्न किया। महात्मा ज्योतिबाफूले ने शिक्षा के महत्व को स्वयं समझा। शिक्षा से मनुष्य में आत्मविश्वास व आत्मसम्मान की भावना अर्थात मानवतावाद की भावना जाग्रत होगी। स्त्री जीवन को सम्मानजनक बनाने के लिए महात्मा फूले ने उसे शिक्षित करने का सुझाव दिया। उनका मानना था कि नारी जब तक शिक्षित नहीं हो जाती, तब तक समाज सच्चे अर्थों में शिक्षित नहीं हो सकता। ज्योतिबा फूले ने शिक्षा को गति देने के लिए पहला पुस्तकालय खोला था। उन्होंने महिलाओं के शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई, विधवा मुण्डन को समाप्त कराने बाल विवाह एवं बहु विवाह को गैर कानूनी तथा अन्तर्जातीय विवाह और विधवा पुनर्विवाह को वैध करार दिया गया।

समाजिक क्रान्ति के अग्रदूत महात्मा ज्योतिबाफूले का समाज सुधारकों में अद्वितीय स्थान है। ज्योतिबा फूले एक ऐसे व्यक्तित्व है, जिन्होंने नारी, जागरण का विगुल सबसे पहले बजाया और महिलाओं की दशा और दिशा को सुधारने के लिए अतुलनीय योगदान दिया। उन्होंने सभी स्त्री–पुरुषों की समानता, स्वतंत्रता एवं बन्धुता पर बल दिया। समाज में फैली विकृतियां एवं प्रत्येक वर्ग को समान अधिकार दिलाने के लिए आजीवन संघर्ष किया था।

19वीं शताब्दी के भारतीय समाज में साम्प्रदयिकता, जाँति–विवाह, विधवा विवाह निषेध तथा अशिक्षा जैसी कुप्रथाएं प्रचलित थी। महाराष्ट्र के ज्योतिबा फूले ने ब्राह्मण की व्यवस्था के विरोध में आन्दोलन चलाया। उन्होंने अन्धविश्वासों, कुरीतियों व सामाजिक बुराईयों को दूर करने, शूद्ध–अतिशुद्ध तथा स्त्रियों को सामाजिक दासता से मुक्त कराने के अथक प्रयत्न किये।

ज्योतिबा फूले को कई स्रोतों से सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा प्राप्त हुई अपनी धाय माँ समुणाबाई, ईसाई मिशनरियों के व्यक्तित्व एवं कार्यों से विदेशी लेखक थॉमस पेन की रचना 'राईट्स ऑफ मैन' से वह अत्यधिक प्रभावित हुए। महात्मा ज्योतिबा फूले ने अपने समाज सुधार कार्यों से चट्टान रूपी समाज को हिलाकर रख दिया।

इनकी धारणा थी कि सभी प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ है वह स्वतन्त्र उत्पन्न हुआ था। उसे समानता व स्वतन्त्रता का अधिकार मिलना चाहिए, चाहे वह किसी भी जाति या वर्ण का हो। स्त्रियां

जो समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, उनकी स्थिति में सुधार अति आवश्यक है। उन्होंने समाज द्वारा शोषित महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए अनाथाश्रम, प्रसूति ग्रह आदि की समुचित व्यवस्था तथा अछूत समझी जाने वाली जातियों के उत्थान के लिए सुधार के लिए भी किये। समाज के उच्च वर्ग ने प्रारम्भ में इनका बहुत विरोध किया, लेकिन उनके सामाजिक चिन्तन का व्यापक प्रभाव पड़ और उनका विरोध धीरे–धीरे कम होने लगा इतना ही नहीं बहुत से लोगों ने भी उनके कार्यों का अनुकरण करना प्रारम्भ कर दिया था।

भारत में अंग्रेजी शासन से पहले प्रजा देना सरकार का दायित्व नही माना जाता था। सन् 1813 में कानून द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने यह आदेश जारी किया– भारत के शेष राजस्व से प्रत्येक वर्ष कम से कम एक लाख रुपये की रकम शिक्षा संबंधी कार्यों पर की जाएगी। पहली बार शिक्षा के द्वारा सभी के लिए खोले गए थे। प्राचीन साहित्य के अध्ययन व उसके विकास के लिए अध्यापकों को प्रोत्साहन, भारतीय नागरिकों को शासन, ज्ञान, प्राच्य शिक्षा पद्धति को प्रोत्साहन देने के लिए वार्षिक अनुदान की रकम विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति के रूप में दी जाने लगी। धीरे–धीरे शिक्षा का प्रचार–प्रसार होना आरम्भ हो गया तथा समय–समय पर ब्रिटिश सरकार द्वारा शिक्षा सम्बन्धी सुधार कानून बनाये गये थे।

महात्मा ज्योतिबा फूले ने शिक्षा के महत्व को स्वयं समझा। उस समय की परिस्थितियों में उन्होंने अनुभव किया कि शूद्र–अतिशूद्र तथा महिलाओं में व्याप्त अज्ञान, अंधविश्वास तथा अशिक्षा को ज्ञान की ज्योति से विकीर्ण करने की महत आवश्यकता है। शिक्षा से मनुष्य में आत्मविश्वास व आत्मसम्मान की भावना अर्थात मानवतावाद की भावना जागृत होगी और नव–संगठित शक्ति उभर कर आयेगी। यह शक्ति सदियों से चल रही दासता के जुंए को उतार फेंकने की सामर्थ्य उत्पन्न कर सकती है। महात्मा ज्योतिबा फूले ने शूद्र–अतिशूद्र तथा महिलाओं में शिक्षा की प्रति रुचि उत्पन्न करने का दृढ़ संकल्प लिया। इस कार्य के लिए उन्हें समाज के विरोध का सामना करते हुए आजीवन संघर्ष करना पड़ा तथा शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी आन्दोलन चलाया। महात्मा फूले ने शिक्षा की महत्ता को अपनी पुस्तक 'शेतकन्याअसूड़' (किसान का कोड़ा) में प्रारम्भिक पंक्तियों में भी बताया। इस पुस्तक में महात्मा ज्योतिबा फूले ने शिक्षा के अभाव में होने वाली हानियों का वर्णन भी किया। उन्होंने लिखा है विद्या अर्थात शिक्षा न मिलने से मनुष्य की बुद्धि ठीक ढंग से काम नहीं कर सकती। जहाँ बुद्धि नहीं, वहीं नीति की बातें भी नहीं हो सकतीं। नीति के अभाव में मानव कभी प्रगति नहीं कर सकता। जहां प्रगति नहीं वहां आर्थिक उन्नति नहीं हो सकती। आर्थिक विपन्नता कारण ही शूद्र अपना धैर्य खो देते हैं। वह कहते थे कि सभी अनर्थों का मूल केवल अविधा या अशिक्षा है। समाज की विपन्नावस्था के कारणों को जान लेना ही उस समय एक बड़ी चुनौती थीं।

महात्मा ज्योतिबा फूले आरम्भ से ही नारी उत्थान के प्रबल समर्थक थे। ब्राह्मण धर्म–शास्त्री के अनुसार ज्ञानार्जन के प्रति स्त्रियों पर प्रतिबन्ध था। सदियों से इसी का अनुसरण होता था। साधारणतया स्त्रियां शिक्षा प्राप्त करने से वंचित थी। बड़े घराने की कुछ स्त्रियों को ही पढ़ने–लिखने का अवसर मिल पाता था।

19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारतीय समाज में स्त्री शिक्षा का प्रबल विरोध था। यदि कोई व्यक्ति अपनी पुत्री को विद्यालय भेजने का साहस करता, उसकी आलोचना की जाती तथा उसे पागल समझा जाता था और उस पर विश्वास नहीं किया जाता था। बाल्यावस्था में ही बालिकाओं

का विवाह कर उन्हें पारिवारिक बन्धनों में जकड़ दिया जाता था। समाज में बहु–विवाह का प्रचलन था। विधवा पुनर्विवाह का विरोध था। अर्थात् स्त्रियों का जीवन अत्यन्त कारुणिक हो गया था। स्त्री जीवन को सम्मान जनक बनाने के लिए महात्मा फूले ने उसे शिक्षित करने का सुझाव दिया। उनका मानना था कि नारी जब तक शिक्षित नहीं हो जाती, तब तक समाज सच्चे अर्थों में शिक्षित नहीं हो सकता। एक शिक्षित माता जो सुसंस्कार अपने बच्चों में डाल सकती है,उन्हें हजार अध्यापक या गुरु नहीं डाल सकते। महात्मा ज्योतिबा फूले ने राश्ट्र की लगभग आधी शक्ति के रूप में स्थित नारी समाज को शिक्षा के महत्व को समझने का प्रयास किया जिसके लिए अनेक कष्ट, अपेक्षा सहीं। एक सतत् लगन व त्याग से अपने काम को बढ़ाया। उनका मानना था कि नारी समाज शिक्षित हो, तभी हमारा राष्ट्र कर सकता है। शिखा की प्राथमिक पाठशाला बच्चों का परिवार है। अतः घर की स्त्रियों का शिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है। 'स्त्री शिक्षा दिये जाने का विचार ब्रिटिश शासन में उदय हुआ। इससे पूर्व भारत में यह सार्वभोम मान्यता थी कि स्त्रियों को शिक्षा की कोई आवश्यकता इसीलिए नहीं है, क्योंकि उन्हें आजीविका का अर्जन नहीं करना।

हिन्दू बालिकाओं के लिए पहली पाठशाला कलकत्ता में सन् 1818 में अमेरिकन मिशनरियों ने आरम्भ की थी। अमेरिकन मिशन ने सन् 1840 में पूजा के आस–पास बालिका विद्यालय खोले थे। स्काटिश ईसाई धर्मोपदेशको द्वारा चलाया हुआ एक विद्यालय पूजा में था जिसमें (10) दस बालिकाएं पढ़ती थीं। ईसाईयों का विद्यालय होने के कारण वह अधिक समय तक नहीं चल सका। स्वतंत्र रूप से बालिका विद्यालय की स्थापना करने वाले महात्मा ज्योतिबा फूले पहले भारतीय थे।

उनके सतत् प्रयासों के बाद सन् 1882 के बाद लड़कियों का उच्च शिक्षा प्राप्त करने की ब्रिटिश ने अनुमति प्रदान कर दी। सन् 1848 में श्री सदाशिव बल्लात् गोबन्डे की पूजा से लगभग 100 किमी दूर अहमदनगर के न्यायधीश के कार्यालय में नियुक्ति हुई। वे अपने साथ श्री ज्योतिबा फूले नामक अपने मित्र को अहमदनगर ले गये थे। एक दिन वे दोनों मित्र मिस फैरर द्वारा संचालित कन्याओं की पाठशाला देखने गये। इस पाठशाला का संचालन मिस फैरर कर रही थी।

इस पाठशाला में अधिकांश छात्राएं निम्न वर्ग की थी। मिस फैरर ने ज्योतिराव एवं श्री गोबन्डे से दुःख किया कि भारत में नारी तरफ बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता है। यह सुनकर ज्योतिराव को बड़ा खेद हुआ। उन्होंने वहीं अपनी पत्नी सावित्रीबाई को पढ़ाने का निर्णय ले लिया। श्री फूले जब पूणे वापस आये और उन्होंने अपने मित्र सखाराम यशवन्त परान्जपे को नारी शिक्षा का कार्य शुरु करने के इरादे से अवगत कराया। महात्मा फूले की पत्नी को परान्जपे पढ़ाने लगे। इस प्रकार कन्या पाठशाला की शुरुआत हो गई।

महात्मा ज्योतिबा फूले ने मिशनरियों द्वारा चलाई जाने वाली पाठशालाओं की सुसंगत तथा क्रमबद्ध कार्यप्रणाली का अच्छी तरह से अवलोकन करने के बाद कन्याओं के लिए पाठशाला खोलने का निर्णय लिया था। ब्राह्मण जाति का शिक्षा पर एकाधिकार बना हुआ था। अन्य वर्ग के बच्चों को पढ़ने का बहुत कम अवसर मिल पाता था। विभिन्न समस्याओं का सामना करते हुए ज्योतिबा फूले ने भी सन् 1847 में अपनी शिक्षा किसी तरह पूरी की थी। इसी कारण उनका पहला कार्यशिक्षा का प्रचार–प्रसार करना था।

बालिकाओं तथा अछूतों की पाठशालाओं का प्रारम्भ ज्योतिबा फूले ने अपने पूर्व निश्चय के अनुसार अगस्त 1848 में पूर्ण की बुधवार पेंठ में भी श्री भिण्डे के मकान में अपनी कन्या पाठशाला आरम्भ की।

पाठशाला में सर्वप्रथम प्रवेश पाने वाली छात्राओं में से 04 छात्राएं ब्राह्मण, एक धनगर (गड़रिया) एक मराठा जाति की थी। इस स्कूल में अपनी लड़कियों को भेजन के लिए अभिभावक डरते थे। फूले दम्पत्ति ने अभिभावकों से मिलकर उन्हें समझाया और स्त्री शिक्षा के महत्व का वर्णन किया। ज्योतिबा के सहयोगी सर्वश्री सखाराम, यशवन्त परांजपे, सदाशिव गोविन्द हारे, सदाशिव राव गोवडे इस पाठशाला को आर्थिक सहायता देते थे। गैर सरकारी स्तर पर कन्या पाठशाला शुरु करने वाले पहले भारतीय ज्योतिराव थे।

कट्टरपंथियों के अनुसार जिस पाठशाला में पुरुष अध्यापक हो, उस पाठशाला में लड़कियों को भेजना उनकी नजर में भयंकर अपराध था। चारों तरफ स्त्री–शिक्षा जैसे पवित्र उद्देश्य का विरोध होने लगा। ज्योतिराव ने विरोध की परवाह नहीं की तथा अपने अध्यापन कार्य में लगे रहे। छात्राओं को वे शिक्षाप्रद कहानियां सुनाते, पठन–पाठन, गणित और व्याकरण पढ़ाया करते थे। शीघ्र ही छात्राओं की संख्या में वृद्धि हो गई।

पाठशाला की छात्राएं ही शिक्षा का प्रचार करने वाली प्रचारिकाएं बन गई। छात्राओं की संख्या में वृद्धि होने पर ज्योतिराव के लिए अकेले पढ़ाना कठिन हो गया। उन्हें पाठशाला के लिए और अध्यापक की आवश्यकता थी। कट्टरपंथियों के भय से कोई भी अध्यापन कार्य हेतु तैयार नहीं हुआ। अध्यापक न मिल पाने पर अब उन्हें अपनी पत्नी सावित्रीबाईफूले तथा सदाशिव गोर्वड की पत्नी सरस्वती बाईगोवड़े को उनके मित्र केशवराव शिवराम भवालकर पूजा की सरकारी पाठशाला के अध्यापक ने पढ़ाया शुरू किया। शीघ्र ही सावित्री बाई पाठ्शाला की छात्राओं को पढ़ने योग्य हो गई। वे ज्योतिबा के काम में हाथ बंटाने लगीं। पूर्ण में सावित्रीबाई जब पाठशाला जातीं, तब कट्टरपंथी उन पर ताने कसते, गालियां देते, कीचड़ और गोबर फेंकते थे लेकिन उनके ये सारे अस्त्र नाकाम हो जाते।

ज्योतिराव ने 15 मई सन 1848 को पूजा की गंजपेठ में जहां शुद्ध–अतिशुद्ध अधिक संख्या में रहते थे, में अपनी पाठशाला पुनः प्रारम्भ की। ज्योतिराव ने छात्र–छात्राओं को एक साथ पढ़ाने का प्रथम प्रयोग किया। उस समय की धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं के समक्ष यह बहुत ही निर्भयतापूर्ण तथा सराहनीय कार्य था। इस पाठशाला की अध्यापिका का कार्यभार प्रारम्भ में सगुणाबाई ने संभाला। बाद में सावित्रीबाई भी वहाँ पढ़ाने का कार्य करने लगी।

पाठशाला खोलकर शिक्षा का प्रचार–प्रसार के कार्य के तीन वर्ष के अनुभव के उपरान्त 03 जुलाई 1851 को पूना की बुधवार पेंठ में अण्ण साहब विपूलण्कर के मकान में उन्होंने बालिकाओं की पाठशाला खोली। इस पाठशाला में ज्योतिराव बिना किसी वेतन के चार घंटे पढ़ाते थे। उनके मित्र केशवराव भवालकर भी शिक्षा कार्यों में ज्योतिराव की मदद करते थे, कट्टरपंथियों द्वारा उनका विरोध भी किया गया। उस समय के शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष जॉन वार्डन ने लिखा कि, ''वह पाठशाला लोगों से बचाकर चलाई जाती थी। ज्योतिबा निडर होकर कार्य करते रहे। उनके बढ़ते कदमों ने उनके सहकर्मियों तथा मित्रों को भी प्रभावित किया था।

1852 में उन्होंने अछूतों के लिए पाठशाला खोली। शिक्षा कार्य की प्रगति हेतू एक कार्यकारी समीति (शिक्षण सस्था) उन्होनें मई, 1852 में स्थापित की। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य अधिक पाठशालाएं वृद्धों तथा स्त्रियों में शिक्षा का प्रचार व प्रसार करना था। ज्योतिराव ने सरकारी अधिकारियों सर एरिस्कन पेरी, लूम्सडेन, रीब्ज, कैण्डी तथा श्री मिचेल आदि जैसे ईसाई पादरियों की

सहानुभूति भी प्राप्त कर ली थी। 03 जुलाई 1851 को बुधवार पेंठ में अण्णा साहब चिपलूणकर के मकान में जो पाठशाल खुली थी, उसमें आने–जाने पर प्रधानाध्यपिका सावित्रीबाई फूले पर भी अत्याचार हुआ। उन्हें घर से स्कूल ले जाने के लिए संस्था ने एक चपरासी भी नियुक्त किया। ज्योतिबा दिन–रात परिश्रम कर शिक्षा रूपी पुण्य कार्य के लिए अथक प्रयास कर रहे थे।

शिक्षण संस्था के सहयोग से 17 सितम्बर 1851 को पूर्ण की रास्ता पेंठ नामक मुहल्ले में दूसरी कन्या पाठशाला तथा 15 मार्च 1852 को बेतालपेंठ नामक मुहल्ले में तीसरी कन्या पाठशाला की स्थापना की। इन पाठशालाओं में विद्यार्थियों ने पुस्तकालय खोलने का अनुरोध किया। उस समय के सरकारी शिक्षा मण्डल की रिपोर्ट में इसका उल्लेख करते हुए लिखा गया है– अछूतों की पहली पाठशाला खोलने का श्रेय ज्योतिराव को है, वैसे ही विद्यार्थियों के लिए पहला पुस्तकालय खोलने का श्रेय भी उन्हीं को है।

अतः स्पष्ट हो जाता है कि ज्योतिराव के प्रथम पुस्तकालय भी खोला था। ज्योतिराव पुणे तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में मुम्बई सरकारी अभिलेखों के अनुसार कुल 18 पाठशालाएं खोलने का उल्लेख मिलता है। पाठशालाओं की स्थापना छोटी–सी अवधि में विभिन्न सामाजिक तथा आर्थिक समस्याओं का सामना करते हुए महात्माफूले ने की थी। 19वीं शताब्दी में इन पाठशालाओं को चलाना कोई अक्षम कार्य नहीं था।

युवा ज्योतिबाफूले ने अपने देशवासियों में शिक्षा का विशेषकर स्त्री शिक्षा का प्रसार कर बड़े पैमाने पर प्रगति की है। इस सम्बन्ध में बाम्बे गार्डियन, ज्ञान–प्रकाश, ट्रिब्यून आर्ब्जवर इत्यादि समाचार पत्रों ने भी अपनी खुशी प्रकट की। महिलाओं के अधिकारों के लिए उनके उद्वार के लिए त्याग करने वाले और तकलीफें सहनें वाले ज्योतिराव को 'स्त्री उद्धारकर्ता' का नाम दिया गया।

सन् 1855 में ज्योतिशा फूले ने रात्रिपाठशाला खोली, जिसमें दिन भर काम करने वाले मजदूर, किसान तथा ग्रहणियां पढ़ने आती थी। यह भारत की पहली रात्रि पाठशाला थी। इस प्रकार ज्योतिबा को रात्रि पाठशालाओं का भी जनक माना जाता है। सन् 1858 में ज्योतिरावफूले में पिछड़े जाति के छात्रों के निवास हेतू पूना में 'बस्तीग्रह' की स्थापना की।

महात्मा ज्योतिराव फूले ने विधवाओं की स्थिति देख सुधार के लिए प्रयास किया। सर्वप्रथम केशवान (बाल कटवाने) जैसे घर्षणित प्रथा के विरोध में उन्होंने आवाज उठाई। ज्योतिराव ने पूना के नाईयों को एकत्रित किया तथा इस घृणित प्रथा के विरुद्ध जाग्रत किया। उनके प्रयत्नों से बम्बई में चार पांच सौ नाई एकत्र हुए और उन्होंने सर्वसम्मति से केशवापन का पाप करने से इन्कार कर दिया। इस सभा में एक नाई ने कहा– ''ब्राह्मण चार पाँच आनों (25–30 पैसों) के लिए हमसे यह कुकर्म करवाते हैं और स्वयं आठ–दस रुपये हथियाते हैं। इस तरह अन्य नगरों के नाईयों ने भी विधवा मुण्डन का कुकर्म बन्द कर दिया। इस प्रयास से ब्राह्मण एवं अन्य वर्ग की विधवाएं भी सकेश जीवन बिताने लगीं।

महात्मा ज्योतिबाफूले का मानना था कि पुरुष एक पत्नी के होते हुए भी कई विवाह कर सकता है, उसे घर की चारदीवारी में रखता है तो यह अधिकार स्त्रियों को क्यों नहीं मिले ? अर्थात उन्होंने बहुपत्नी विवाह के विरोध में तर्क दिये।

ज्योतिरावफूले तथा अन्य समाज सुधारकों के दबाब डालने से सरकार ने 1872 में 'नेटिव मैरिज एक्ट पास किया जिसके द्वारा बाल विवाह एवं बहुविवाह को गैरकानूनी तथा अन्तर्जातीय विवाह और विधवा पुनर्विवा को वैध करार दिया गया।

अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि ज्योतिराव फूले ने महिलाओं की स्थिति को ऊँचा उठाने के लिए अथक प्रयास किये। उन्होंने सामाजिक चेतना और सत्य मार्ग का पथ उन लोगों को दिखाया जिनकी प्रगति के मार्ग अवरुद्ध थे। उन्होंने मानसिक रूप से मंद और आर्थिक रूप से पंगु बनाये गये समाज में क्रांति का बीज बोया। उन्होंने जनमानस में व्याप्त दर्द का इलाज किया। वह धर्म विरोधी नहीं थे पर कुरीतियों, अंधविश्वासों, अस्पृश्यता और ऊँच नीच की भावना के विरुद्ध थे।

सन्दर्भ

1. पत्रिका–संघर्ष और सृजन (महात्मा ज्योतिराव फूले पुण्य स्मर्षति शताब्दी) सम्पादक, आर0एन0 माली, लेख– डा0 रामनाथ, 'सामाजिक क्रान्ति के जनक ज्योतिराव फूले, पृ0 06
2. नरके हरि, महात्मा फूले, साहित्य और विचार
3. जगताप, मुरलीधर, युगपुरुश महात्मा फूले
4. अहूजाराम, भारतीय सामाजिक व्यवस्था
5. बाम्बे गार्डियन, 12 नवम्बर 1851
6. महाराष्ट्र मानस, महात्मा फूले विशेषांक (पत्रिका) 16 फरवरी, 1991 (लेख महात्मा फूले शैक्षणिक तत्वाधान व कार्य, कौर, धंनजय)
7. माली, एम0जी0 क्रान्ति ज्योति सावित्री बाई फूले
8. जोशी, श्रीपाद, महाराष्ट्र के समाज सुधारक
9. सैनी, लल्लूलाल, महान समाज सुधारक महात्मा फूले
10. कीर, धनंजय, महात्मा ज्योतिराव फूले,
11. अल्तेकर, डा0 ए0एस0, पोजिशन ऑफ वूमेन, इन हिन्दू– सिविलाइजेशन
12. दि ज्ञान प्रकाश 1871 (माली एम0जी0 पूर्वोक्त)